Research Paper IMPACT FACTOR VALUE : 6.247 | E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 12 | ISSUE : 4 | APRIL 2026

महीप सिंह के कथा साहित्य में शिल्प एवं शैली

श्रवण लाल सेन [1] | डॉ. रामकृष्ण शर्मा [2]

[1] शोधार्थी (हिन्दी), ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर.

[2] शोध पर्यवेक्षक, ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर.

ABSTRACT:

प्रस्तुत शोध आलेख में महीप सिंह के कथा साहित्य में शिल्प एवं शैली का अध्ययन किया गया है। महीप सिंह आज कथा साहित्य में अपना अद्वितीय स्थान बना चुके है। उनका कथा साहित्य अविस्मरणीय है। आज के दौर में मानवीय भावों और विचारों की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम भाषा है। विचार-विनियम का मुख्य साधन भाषा के रूप में मनुष्य समाज से अर्जित करता है। महीपसिंह की कहानियों में शिल्प और शैली के जो भाव देखने को मिलते है वह अन्यत्र कही भी उपलब्ध नहीं होते है। जनसामान्य के अवचेतन में बसने वाले भाषा के रूप को पूर्ण रूप से आत्मसात् करके ही रचनाकार साधारणीकरण की प्रक्रिया में सफल हो सकता है। महीप सिंह की कहानियों में भाषा और शिल्प का पर्याप्त वैविध्य मिलता है। भारत बहुभाषी देश है, यहाँ अनेक जाति-धर्मों के लोग निवास करते हैं, सभी की अपनी भाषायी पहचान होती है। ऐसे में कोई भी एक भाषी हो सकता या बहुभाषी भी हो सकता हैं। महीप सिंह ने अपनी कहानियों में संस्कृत, हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी एवं पंजाबी भाषा का प्रयोग किया है। यह प्रयोग ही उन्हें साहित्य जगत में विशेष स्थान प्रदान करता हैं।

KEYWORDS:

भाव, संवेदना, भाषा, जीवन, चेतना, संघर्ष, रूप, अनुभव, अवचेतन, शिल्प, शैली।

PAPER ACCEPTED DATE:	PAPER PUBLISHED DATE:
3rd April 2026	4th April 2026
PAPER DOI NO:	**PAPER DOI LINK:**
10.5281/zenodo.19413610	https://zenodo.org/records/19413610

मूल आलेख-

साहित्य की विभिन्न विधाओं में 'कहानी' का विशिष्ट स्थान है। क्योंकि कहानी ने जीवन के यथार्थ को उसकी अनेक संभावनाओं के साथ सम्प्रेषित किया है। आज भी विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में यथार्थ जीवन से जुड़ी हुई कहानियाँ प्रकाशित हो रही है। कहानी यथार्थवाद और मनुष्य जीवन के सरोकारों से अधिक निकट होती है। जीवन की उलझन भरी स्थितियों, समस्याओं और विडंबनाओं ने हिन्दी कहानी को बहुआयामी रूप दिया है। महीप सिंह 'सचेतन कहानी' के सूत्रधार हैं। उन्होंने साहित्य सृजन को स्वधर्म के रूप में अपनाया है। इसलिए उन्होंने आर्थिक, राजनीतिक फायदे को ध्यान में रखकर समझौते नहीं किए। उनका कहानी शिल्प उनकी वैचारिक दृष्टि का अनुसरण और अभिव्यंजना भी करता है। उनकी कहानियों की भाषा, शिल्प एवं शैली में सहजता झलकती है। कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि उनकी सुदीर्घ कहानी यात्रा उनके सफल कहानीकार होने का प्रमाण है।

जब रचनाकार अपने परिवेश और जीवन संघर्ष से प्राप्त अनुभवों के विविध रेशों को गहरी भाव-संवेदना और बौद्धिकता के साथ अपने रचनात्मक शैली से शब्द संसार का सृजन करता है तब रचना अपने समय का साध्य बन जाती है। रचनाकार हमें उससे दो चार होता उलझता जूझता स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। रचनाकार, कलाकार, शिल्पकार या मूर्तिकार हो सबकी अन्तश्यचेतना उसकी शैली को प्रखर बनाती है। लेखक 'दृष्टा' और 'सृष्टा' होता है। वह अपने देश और काल को जिस तरह समझता है वही उसके साहित्य में झलकता है।

महीपसिंह की कहानियों की खूबी, शक्ति और सफलता उनकी भाषा है। महीपसिंह की कहानियों में महानगरीय जीवन का सीमित क्षेत्र भले ही आया हो, उसमें इस सीमित जीवन को पूर्ण वैविध्य और गहराई से परखने की क्षमता है। इसी भूमि पर इनकी कहानियाँ हिन्दी कहानी में अपनी एक अलग पहचान बनाती हैं। निस्संदेह इन कहानियों में जीवन की संश्लिष्टता के विविध आयामों में अर्थ खोजती रचनात्मक प्रतिबद्धता के दर्शन होते हैं।"[1] महीप सिंह की कहानियों में भाषा को समृद्ध करने के लिए बीच-बीच में पंजाबी भाषा के शब्दों का प्रयोग देखने को मिलता है। जिससे भाषा के सौन्दर्य में वृद्धि हुई है। केवल विभिन्न प्रकार की शब्दावली और उसके सहज प्रयोग को देखकर कलाकार की साहित्यिक महत्ता निश्चित नहीं की जा सकती। यह प्रयोग कुशलता, चातुर्य एवं प्रसंगानुरूप होना चाहिए। महीप सिंह की कहानियाँ 'कहानी कला' की दृष्टि से अनूठी है। शिल्प तथा भाषा की बारीकियों में न फँसते हुए तथा परम्परागत पांडित्यपूर्ण साहित्यिक मानदंडों में न अटकते हुए उन्होंने अपनी रचना में स्वानुभव विचारों को अभिव्यक्ति करने में ही सार्थकता समझी है।

भाषा: कहानीकार महीप सिंह की कहानियों की शक्ति उनके कथ्य में हैं। लेकिन यह उनकी विषेशता है कि वे प्रायः बहुत हल्के-फुल्के ढंग से, चलती-फिरती सामान्य-सी बात-चीत के माध्यम से एक गहरे दर्द को अभिव्यक्त करते हैं। कहीं-कहीं ऊपर से एकदम सामान्य-सी लगने वाली कहानियाँ किसी विशिष्ट बिंदु पर असाधारणत्व का ठोस परिचय देती हैं। उनकी भाषा संकेतों, प्रतीकों और बिम्बों के माध्यम से जीवन सन्दर्भों और युग सत्यों की अभिव्यक्ति करती हैं। डॉ. रामदरश मिश्र जी के शब्दों में- " महीप सिंह की कहानियों की शक्ति यह हैं कि वे आज के विविध जीवन-सत्यों की अनुभूतिमूलक विवृत्तियाँ हैं। लेखक ने कलात्मक निस्संगता से इन अनुभवों को रचा हैं। निस्संग-सी, अनाटकीय-सी दिखने वाली कहानियाँ को एक व्यंजक स्थल, एक संकेत विशिष्टता प्रदान कर देता हैं और ये कहानियों अपनी सादगी और सपाटता में चमक उठती हैं।"[2] भाषा उनके कथ्य या संवेदना की तरह ही अत्यंत सरल और सहज है। प्रसिद्ध कहानीकार कृष्णा सोबती का भी मानना हैं कि " महीप सिंह वक्त पर सही शब्द का प्रयोग करते हैं।"[3]

परिनिष्ठित भाषा- महीप सिंह ने अपनी कहानियों में कई स्थानों पर परिनिष्ठत हिन्दी का प्रयोग किया है। कहीं-कहीं तो पात्रों की परस्पर बात-चीत की भाषा भी सुसंस्कृत है। मुगल परिवेश पर लिखी गई 'कोहनूर की कीमत' कहानी की भाषा संस्कृत निष्ठ है।

शब्द प्रयोग के विभिन्न रूप- महीप सिंह की कहानियों में शब्दों के विविध रूप प्रयुक्त हुए है। इससे भाषा में सहजता सरलता और सौदर्य का प्राकट्य हुआ है। उन्होंने खड़ी बोली के साथ ही देशी, विदेशी स्रोंतो के विविध प्रकार के शब्दों का प्रयोग किया है।

संस्कृत के तत्सम शब्दो का प्रयोग- महीप सिंह की कहानियों में तत्सम शब्दो का प्रयोग भाषा की प्रकृति और स्थितियों की मांग के अनुरूप ही हुआ हैं। उनकी कहानियों में प्रयुक्त तत्सम शब्द इस प्रकार है- सम्मिलित, कष्ट, सौम्य, घृणा, निधि, बिन्दु, कठोर, अवाक, क्षुब्ध, नवागन्तुक, केश विन्यास, गवेषणा, नगण्य, आकाश, कुसुम, रात्रि, जागरण, कार्यवशात, विराजते, आदान प्रदान, सम्मुख, प्रतिस्पर्धा, पुनरावृत्ति, मुनिवर, पुनः, तिथि, भाव, भंगिमा, अनिवर्चनीय, आत्मतृप्मि विदेह, काम, प्रवाह, वशीकरण, आवभगत, लौह स्तम्भ, मस्तिक, वक्षस्थल, श्वेत परिधान, चिकित्सा, मूर्छितावस्था, निमिष, औत्सुक्य, भ्रम, निवारणार्थ, विचाराग्नि, दीपोत्सव, परितोष, पश्चात, दुर्ग, कोश, अस्ताचल, प्रतीची, अरूणिमा, क्षीणप्राय, सशस्त, आत्मसमर्पण, नवीन, रक्तरंजित, अनभिज्ञ, परामर्श, मुक्तिदूत, सतृष्ण, लालिमा, उद्धिग्नता, मुख, लालसा, महोत्सव, पण्डाल, अभिमत, भार, समतल, निःशब्द, बृहत, कराल, अचला, प्रकोप, मणिमय, विशारद, हरिओम् आदि।''[4]

अवधी भाषा का प्रयोग- महीप सिंह ने अपनी कुछ कहानियों में अवधी भाषा का प्रयोग भी किया है। पात्रानुरूप होने के कारण वह अत्यंत प्रभावी बन पड़ी है। भाषा में प्रभावोत्पादकता के लिए महीप सिंह को किसी भाषा में परहेज नहीं है। उन्होने 'एक गुंड़े का समय बोध' कहानी में कानपुर के एक स्थानीय गुंड़े की भाषा को अवधी का रूप देकर प्रभाव उत्पन्न किया हैं। कहानी का जग्गू अपनी व्यावसायिक कठिनाई अपने मित्र के सामने इस रूप में रखता है " कुछ नहीं भइया। आज-कल हिआं हमार धंधा कछु ठीक-ठाक नहीं चलि रहा। अच्छा भइया तुम तो दुई चार दिन हिआं रहि हौ? हम तुमका कल मिलब। अब हम अपन आज की कमाई करे जात हनं।''[5]

विदेशी शब्द- महीप सिंह की कहानियों में विदेशी शब्दों की भी भरमार है। एक स्थान पर पुर्तगाली शब्द का प्रयोग हुआ है अंग्रेजी शब्द रोज को ही पुर्तगाली में रोजलिया कहते है।''[6]

अरबी के शब्द- महीप सिंह ने अपनी कहानियों में अरबी शब्दों का जमकर प्रयोग किया हैं। इतमीनान, इजाजत, जिस्म, जुर्माना, फौजी, नफीस, खुलासा, तरकीब, शरीफ, आम, अदालत, वालिद, मुबारक, दहशत, नियत, शुक्रगुजार, इकबाल, अहसान हुजुर, मशहूर, मुवक्किल, अक्स, वाकिफ, खत, तमीज, ताश, ताकत, तमाशा, अफवाह, अदना, कमल, एतराज, हैरान, मुलम्मा, मकान, फासला, मर्जी, मुबारक, मुहिम, फसल, मंजिल, फिजा, कबाब, मुनाफा, खत्म, खबर, मुकाबला, मकसद, अमल, अजनबी, मर्तबा, मजहब, अदब, मशवरा, मजबूर, अजीब, फसदा, हिदायते, माहिर, महज, लिफाफा, कुर्सी, कद, इन्कार, फर्ज, वाजिब, अखबार, मरीज तैश मिजाज, इजहार, रकीब, नूर, मशक्कत, रस्म, शरीक, जब्त, तलाक, हिफाजत, जुर्म, इंतजाम, मुअत्तिल, निहायत, जहालत, हलाल आदि।

फारसी के शब्द- महीप सिंह ने फारसी शब्दों का प्रयोग भी किया है। पंजा, पेशगी, पनाह मेहरबानी, दरख्त, शोखी, शोरबा, तपिश, तीमारदारी, ताजा, शोख, तनख्वाह, जायदाद, शायद, सिफारिश, शादी, शहर, ताजगी, शाम, शर्म, तबाह, शीशा, तल्खी, आहिस्ता, दारू, नजदीक, दरवाजा, दस्तक, नाश्ता, नर्म, परहेज, खुशबू, गज, गंदा, शाहजादी, गर्मी, रोशनी, रोशनदान, तमाशबीन, फानूस, फरोख्त, गुनाह, कमबख्त, अफसोस, मातमपूर्सी, नायाब, दस्तखत, बीमार बुजदिल, शागिर्द, बाजार, बुजुर्ग, शामियाना, बेकार, बिस्तर, चश्मदीद, आसमान, आवाज दस्तावेज, आवारा, गुजर, आस्तीन, उम्मीद, आबाद आदि।''[7]

अंग्रेजी शब्द- महीप सिंह की कहानियों में अंग्रेजी शब्दों की प्रचुरता के साथ ही साथ अंग्रेजी के पूरे-पूरे वाक्यो का भी बहुत अधिक प्रयोग देखने को मिलता है। जैसे-

''वी आर आल्सो ट्राइंग फार दी सेम।''[8]

''निशा आइ वान्ट टू मैरी यू।''[9]

एक स्थान पर महीप सिंह अंग्रेजी कवि कालरिज के शब्दों में कहते है- o lady we receive but what we give''[10]

आई एम क्रेजी फॉर द बेल.....।''[11]

महीपसिंह के साहित्य में शैलियों का प्रचुर मात्रा में प्रयोग देखने को मिलता है। यथा-

व्यंग्यात्मक शैली- व्यक्ति और समाज के हित की भावना को ध्यान में रखते हुए की गई चोट को व्यंग्य कहते है। समाज की कुरूपताओं और विसंगतियो का पर्दाफाश करने के लिए 'व्यंग्य' एक शक्तिशाली औजार माना जाता है। विद्वानों ने व्यंग्य के कई अर्थ प्रस्तुत किए हैं। अंग्रेजी में 'व्यंग्य' के लिए 'सेटायर' शब्द का प्रयोग होता है। डॉ. महीप सिंह कहते हैं – "अपने समाज की विद्रूपतापूर्ण स्थितियाँ देखकर किसके मन में उनका उपहास करने, उन पर व्यंग्य करने का मन नहीं करेगा?"' आज का युग किसी भी सन्दर्भ में बहुत आक्रोशयुक्त होकर हमला करने का नहीं हैं, बल्कि स्थितियों को चिढ़ाने उन पर व्यंग्य करने और उनका मजाक उड़ाने का हैं। आज का आदमी पहले से कहीं ज्यादा संवेदनशील है इसलिए जो बात पहले थप्पड़ मारकर सिखाई जाती थी, वह अब आंख के इशारे से समझाई जाती हैं।''[12]

एकालाप शैली- एकालाप को लंबा संवाद भी कहा जाता हैं। महीप सिंह ने अपनी अनेक कहानियों में एकालाप शैली का प्रयोग किया हैं। यहाँ 'कितने सम्बंध' कहानी का एक एकालाप संवाद दृष्टव्य हैं- जिसमें 'मैं' मानो अपने सामने बैठे व्यक्ति से अपने जीवन में आए संबंधों के बारे में स्पष्टीकरण देता है- "तुम इसे दिखावा कहोगे- ''तुम कहोगे कि मैं दिखावा करने में बहुत कुशल हूँ। हां, कुछ हद तक तुम्हारा कहना ठीक हैं। यह दिखावा हैं, भयंकर दिखावा, ऐसा दिखावा, जिसके विरुद्ध कभी-कभी तो मेरा रोम-रोम विद्रोह कर उठा है। परंतु में उसे निभाता रहा हूँ। दस-बारह वर्ष तो हो ही गए हैं, मैं इसे निभाए चला जा रहा हूँ। मुझे भरोसा है कि कुछ और वर्ष मैं इसे इसी तरह निभाए जाऊँगा।''

"भाई मैं तो दिखावा नहीं कर सकता। जिसे मैं पसंद करता हूँ ..... बस करता हूँ। जिसे नहीं करता, नहीं करता। यह मेरे लिए नामुमकिन है कि जिसे मैं पसंद नहीं करता उसे मैं दस-बारह वर्षों तक यह भरोसा दिलाए रहूँ कि मैं पसंद करता हूँ ..... दिस इज जस्ट नाट पॉसिबल ..... यह नहीं हो सकता ..... यह दिखावे वाली जिन्दगी मैं नहीं जी सकता।''

"तुम ठीक कहते हो। अपने आपको खरा और बेलाग समझने वाला हर आदमी यही दावा करेगा। सच बात तो यह है कि जो ऐसे नहीं हैं वे भी ऐसा दावा करते हैं क्योंकि खरा और बेलाग होना अच्छे मूल्यों की गिनती में आता हैं। कुछ मामलों में मैं भी शायद खरा और बेलाग होने का दावा करूँ ..... ऐसा दावा करना मुझे अच्छा भी लगे। परंतु इस मामले में मैंने दिखावा ही किया हैं, बहुत बड़ा दिखावा।

परंतु मुझे यह बात कुछ और लोगों को भी बताने दो। तुमने तो मेरे खिलाफ फतवा दे दिया। देखूँ और लोग क्या कहते हैं ?''[13]

फ्लैश बैक शैली- पूर्वदीप्ति या फ्लैश बैक सिनेमा से संबंधित शब्द हैं। डॉ. प्रतापनारायण टंडन के अनुसार- "जिसमें घटना या घटनाओं को तुरंत न दिखाकर पात्र की स्मृति में लौटकर दिखाया जाता हैं। इसमें संदेह नहीं कि इस तकनीक द्वारा एक ही घटना पर पात्र-विशेष के दोहरे मनोभावों का प्रभाव सरलता से दिखाया जा सकता हैं। अतीत परिस्थिति को जीता हुआ पात्र न केवल उन भावनाओं और विचारों का विश्लेषण करता चलता हैं, जिनका तात्कालिक संबंध परिस्थिति से था, बल्कि उस भावना का भी आरोप करता हैं, जिसका उस परिस्थिति को पुनः सोचते हुए होना स्वभाविक है।''[14]

'धूप की उंगलियों के निशान' कहानी में अतीत वर्तमान के साथ चलता-सा लगता है। कहानी में तलाकशुदा पति-पत्नी वर्षों बाद अचानक मिलते हैं। दोंनो में पूर्वजीवन को लेकर कोई कटुता नहीं हैं। पत्नी समझ नहीं पाती कि उससे बात करे या न करे। लेकिन अगले ही क्षण आग्रह कर वह उसे अपने साथ फ्लैट में ले जाती है। उसका पूरा ध्यान रखती है। बाहरी तौर पर सामान्य लगने वाले नायक के मन में अतीत की अनेक स्मृतियाँ उभर आती हैं। वह लेट गया। पता नहीं कितनी डगमग स्मृतियाँ उसे मथ रही थी। इस औरत के साथ उसने सात वर्ष से अधिक का समय पति के रूप में गुजारा था। शादी के पहले दिन से ही उसे लगा था सब कुछ वैसा नहीं था जैसा उसने सोचा था। उसे लगा था नीता मे कुछ अजीब तरह का दर्प है। जब वह नहीं कहती है तो उसका अर्थ नहीं होता है। और वह हाँ कभी नहीं कहती। उसका नहीं न कहना ही हाँ होता है। हाँ के क्षणो में भी वह उन्मुक्त नहीं होती। पता नहीं कौन-सी छाया उसे घेरे रहती है ढके रहती है जिससे वह बाहर नहीं निकलती। उसे लगा था नीता बहुत कम हँसती है। वह बस मुस्कराती है। उसकी मुस्कराहट में भी गर्व गुमान-सा झरता है। पत्नी के स्वभाव को न समझ पाने के कारण पति में स्थित पुरुष को चोट लगती है और दोनों अलग हो जाते है। इस प्रकार पूर्व पत्नी के फ्लैट में आराम करते हुए उसके साथ बिताए जीवन की अनेक बाते उसे याद आती है, और अब वर्तमान में उसके साथ कुछ समय बिताने पर उसके मन में एक शोर-सा उत्पन्न होता है।''[15]

हिन्दी साहित्य में महीप सिंह एक कथाकार, पत्रकार, सम्पादक और मीडिया लेखक के रूप में प्रसिद्ध है। वे एक ऐसे अनुभव के विराट व्यक्तित्व हैं जिनकी कहानियों में व्यक्ति, परिवार, समाज, धर्म, राजनीति और देश की समस्याओं को पर्याप्त स्थान मिला है। उनकी सचेतन दृष्टि पारिवारिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक और राजनीतिक समस्याओं को नई वैचारिक पृष्ठभूमि प्रदान करती है। संवेदनशील कहानीकार महीपसिंह की कहानियों में पारिवारिक, सामाजिक वातावरण, सांस्कृतिक जीवन एवं राजनीतिक परिस्थितियों का चित्रण मिलता है। जिसकी प्रांसगिकता स्वयं सिद्ध है। वे मानवतावादी कहानीकार है उनकी कहानियों की प्रासंगिकता हमे इस रूप में दिखाई देती है। उनकी रचनाएँ सामान्य जनजीवन की सभी परिस्थितियों की विषय वस्तु लिए हुए है। उन्होंने सामान्य जीवन के अनुभवों को साझा करते हुए रचनाएँ लिखी है। उनकी कहानियों को कालजयी इसीलिए कहा जाता है क्योंकि आजादी के बाद में लिखी गई उनकी कहानियाँ आज भी प्रांसगिक है। बढ़ते भौतिकवाद एवं उपभोक्तावाद में व्यक्ति का जीवन कितना परिवर्तित होता जा रहा है ऐसे में मानवीय एवं नैतिक मूल्यों को सुरक्षित रखना मुश्किल होता जा रहा है। इसका प्रभाव व्यक्ति के साथ-साथ परिवार, समाज, एवं देश पर भी पड़ रहा है।

निष्कर्ष:- महीपसिंह के कथा साहित्य में शिल्प एवं शैली के अद्भुत नजारें देखने को मिलते है। उनके कथा साहित्य में जीवन से जुड़ी घटनाओं के तथ्यों को शिल्प साधना एवं शैली विज्ञान से मानस पटल पर भली भाँति सुसज्जित किया है। उनका कथा साहित्य जीवन को नवीन दिशा प्रदान करने में सहयोग प्रदान करेगा।

REFERENCES

1. गुरुचरण सिंह, कथाकार महीप सिंह, अभिव्यंजना प्रकाशन, नई दिल्ली, सं0 1992, पृ.39

2. रामदरश मिश्र, हिन्दी कहानी अंतरंग पहचान, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, सं0 1994, पृ.172

3. डॉ. अजित चव्हाण: कहानीकार महीपसिंह संवेदना और शिल्प, चन्द्रलोक प्रकाशन, कानपुर, सं0 2011, पृ.241

4. वही, पृ. 241, 242

5. महीपसिंह, क्षणों का संकट, एक गुंडे का समय-बोध, अभिव्यंजना प्रकाशन, दिल्ली, सं0 2000, पृ. 192-193

6. डॉ. महीपसिंह, संबंधों का सन्नाटा, शराब, अभिव्यंजना प्रकाशन, दिल्ली, सं0 2000, पृ.17

7. डॉ. अजित चव्हाण: कहानीकार महीपसिंह संवेदना और शिल्प, चन्द्रलोक प्रकाशन, कानपुर, सं0 2011, पृ.246

8. डॉ. महीपसिंह, सुबह की महक, राष्ट्र भाषा प्रकाशन, लखनऊ, सं0 1959, पृ.164

9. वही, पृ.179

10. वही, पृ.186

11. वही, पृ.287

12. डॉ. कमलेश सचदेव, महीपसिंह का कथा संसार, अभिव्यंजना प्रकाशन, नई दिल्ली, सं0 2002 पृ.103

13. डॉ. महीपसिंह, संबंधों का सन्नाटा, अभिव्यंजना प्रकाशन, दिल्ली, सं0 2000, पृ.54

14. प्रो. किशोर गिरडकर, मन्नू भंडारी का कथा माहित्य, विश्वभारती प्रकाशन, नागपुर, सं0 1985, पृ.12

15. डॉ. अजित चव्हाण, कहानीकार महीप सिंह संवेदना और शिल्प, चन्द्रलोक प्रकाशन, कानपुर, सं0 2011, पृ.299